Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities, Vol 1 pp. 39-42, 2006
DOI: 10.51220/hjssh.v1i1.7

सन् १८५७ की गदर में रियासत टिहरी

सुरेश चन्द्र चन्दोला
इतिहास विभाग, हे.न.ब. गढ़वाल वि. वि. परिसर, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

गढ़वाल पर ब्रिटिश शासन की अर्द्ध-शताब्दी के आरम्भिक कुछ वर्षो तक सम्भ्रान्त परिवारों में, साहित्यकारों एवं कलाकारों में फिरंगी विरोधी भावना बड़ी प्रबल रही तथा सन् 1857 में जब ऐसी भावना पुनः उभरी तो उसने देशव्यापी सशस्त्र क्रान्ति का रूपले लिया, जो भारतीय इतिहास में गदर के नाम से विख्यात है। सन् 1815 में गढ़वाल विभाजन के पश्चात गढ़वाल के राजा ने अपनी राजधानी श्रीनगर से हटाकर टिहरी में स्थापित कर ली थी। जहाँ एक ओर ब्रिटिश शासन के अधीन गढ़वाल की जनता उत्पीडन का शिकार बनी वहीं दूसरी ओर राजा के अधीन गढ़वाली जनता भी अत्याचारों से बची न रही। सन् 1857 के गदर में ब्रिटिश शासन के अधीन गढ़वाल मे कोई हलचल नहीं हुयी। यद्यपि सन् 1857 की गदर में मैदानी भागों के अनेक राजा एवं जमीदार अंग्रेजों के विरूद्ध युद्ध पर उतर आये तथापि टिहरी नरेश सुदर्शन शाह ने इस समय अंग्रेजों का पूर्ण रूप से साथ दिया। टिहरी नरेश का इस समय अंग्रेजों की सहायता करने का सम्भवतया एक कारण यह भी था। इन्हीं अंग्रेजों ने गढ़वाल से गोरखा शक्ति का उन्मूलन कर सुदर्शनशाह को उसका पैत्रिक राज्य वापस दिलाया था। यद्यपि इस सामरिक सहायता का मूल्य सुदर्शनशाह को गढ़वाल का आधे से अधिक भू-भाग अंग्रेजों को युद्ध व्यय हर्जाने के रूप चुकाना पड़ा था।[2]

कहा जाता है कि जब नजीबाबाद के नवाब का उत्कर्ष चरम सीमा पर था और उसने गंगा जी से लेकर रामगंगा तक फैले बिजनौर जिले से अंग्रेजों को भगाकर अपने साम्राज्य का विस्तार कर डाला, तो उसने अपने एक विश्वासपात्र व्यक्ति के साथ टिहरी नरेश सुदर्शनशाह के लिए एक पत्र भेजा था। उस पत्र में लिखा था- "आप फिरंगियों को देश से निकालने में हमारा साथ दें एवं गदर में सक्रिय भाग लें। ऐसा करने पर आप अपना सम्पूर्ण पैत्रिक राज्य पुनः फिरंगियों से वापस पा जायेंगे और यदि आपने ऐसा नहीं किया तो हम आपके राज्य पर आक्रमण करने के लिए बाध्य रहेंगे[3]। नबाब के इस पत्र के जबाब में टिहरी नरेश सुदर्शनशाह ने लिखा -

" ..... जो शक्ति सदैव न्याय के पक्ष पर चलती है वह अजेय होती है। हम लोग क्षत्रिय हे। हमारा धर्म है की जिसने हमारे साथ उपकार किया है हम उसके साथ अपकार नहीं कर सकते। तुम फिरंगियो की शरण में जाकर क्षमा मांगों।[4]

इतना ही नहीं अंग्रेज भक्त टिहरी नरेश सुदर्शनशाह ने सन् 1857 की गदर में ब्रिटिश सरकार की सहायता भी की। उसने अंग्रेजों की अस्थायी सेना के लिये अपने राज्य से अनेक व्यक्तियों को

©SHARAD

भेजा।[5] साथ ही अंग्रेज परिवारों की आर्थिक सहायता भी की। अनेक अंग्रेज परिवारों ने मैदानी क्षेत्रों में गदर में चल रही फिरंगी विरोधी लहर के कारण मसूरी में शरण ले रखी थी। चूंकि क्रान्तिकारी देहरादून होते हुये मसूरी पहुँच सकते थे और वहां रह रहे अंग्रेज परिवारों पर हमला कर सकते थे। अत: टिहरी नरेश सुदर्शनशाह ने इन अंग्रेज परिवारों की सुरक्षा के लिए अपने दो सौ सशस्त्र सैनिक मसूरी भेज दिये थे। इन सशस्त्र सैनिकों का शिविर देहरादून और मसूरी के मध्य स्थित राजपुर पर था। तथा गदर शान्त होने तक सैनिक वहीं बने रहे।[6]

टिहरी नरेश सुदर्शनशाह द्वारा अंग्रेजों की चापलूसी का आलम यह था कि उसने अपनी राजधानी टिहरी तथा राज्य के अन्य भागों में ऐसी व्यवस्था की हुयी थी कि यदि वहाँ किसी भी समय कोई अंग्रेज आ जाये तो उसकी पूरी-पूरी आवभगत की जाय[7]। सुदर्शनशाह ने यह व्यवस्था भी की हुयी थी कि वहाँ पहुँचने वाले अंग्रेज को जिस चीज की आवश्यकता हो इसकी पूर्ति तुरन्त की जाये[8]। शिमला से मसूरी होकर जाने वाला पर्वतीय मार्ग टिहरी-श्रीनगर होकर जाता था। टिहरी नरेश स्वयं उन अंग्रेजों को सयाहता का आश्वासन देता था जो इस मार्ग से चलकर रियासत की राजधानी टिहरी पहुँचते थे। इस मार्ग पर अपने राज्य के अन्दर स्थित पड़ावों पर राजा ने अंग्रेजों की सुख-सुविधा के लिये समुचित व्यवस्था की हुयी थी[9]।

अंग्रेजों को अपने महल में शरण देने के उद्देश्य से टिहरी नरेश ने 'फकलोग' नामक गांव के समीव अपने रनिवास के लिये कच्चे भवन बना दिये थे, जिससे अंग्रेजों को राजमहल में उचित मान-सम्मान दिया जा सके।[10] सन् 1857 की गदर में टिहरी नरेश सुदर्शनशाह की ब्रिटिश राजभक्ति के उदाहरणों से स्पष्ट है कि गदर काल में रियासत टिहरी पूर्ण रूप से अंग्रेजों के साथ थी।

गदर काल में टिहरी नरेश द्वारा की गयी ब्रिटिश सरकार की सहायता से ब्रिटिश अधिकारी उनसे अत्यधिक प्रभावित हुये थे। इस सन्दर्भ में प्रेम सिंह मियाँ लिखते हैं- '' ..... गदर काल में टिहरी नरेश द्वारा की गयी सेवाओं के पुस्कार स्वरूप ब्रिटिश सरकार ने टिहरी नरेश सुदर्शनशाह को बिजनौर का कुछ इलाका देने का विचार किया था, परन्तु टिहरी नरेश ने ब्रिटिश सरकार से यह आग्रह किया कि यदि ब्रिटिश सरकार उनहें कुछ देना ही चाहती है तो वह उन्हें उनके पूर्वजों की राजधानी श्रीनगर की जागीर प्रदान करें, जिसमें देहरादून एवं ब्रिटिश गढ़वाल सम्मिलित थे। इस सन्दर्भ में अभी पत्र-व्यवहार चल ही रहा था कि सन् 1859 के जून माह में सुदर्शनशाह का स्वर्गवास हो गया। परिणाम यह हुआ कि उसे श्रीनगर की जागीर नहीं मिल पायी[11]।''

सन् 1856 में कप्तान रामजे (जो बाद में मेजर जरनल सर हेनरी रामजे कहलाये) कुमाऊँ के कमिश्नर नियुक्त हुये। इनके पदभार ग्रहण करते ही उत्तरी भारतवर्ष में गदर मच गया[12]। पर्वतीय क्षेत्रों में पूर्ण रूप से शान्ति रही, किन्तु अशान्ति की सम्भावना को देखते हुये रामजे ने पर्वतीय क्षेत्रों में मार्शल

लॉ (फौजी-कानून) लगा दिया था। गदर काल में जिसने अशान्ति फैलाने का प्रयास किया या जिस पर क्रान्तिकारी होने का थोड़ा भी सन्देह हुआ उसे या तो जेलों में बन्द कर दिया गया या चानमारी में मरवा दिया गया[13]।

ब्रिटिश सरकार द्वारा संरक्षित रियासत टिहरी में नरेश सुदर्शनशाह न सन् 1857 की क्रान्ति की चिंगारी को अपने राज्य में सुलगने नहीं दिया। एक मात्र घटना का उल्लेख उस समय बद्रदत्त पाण्डे जी ने अपनी 'कुमाऊँ' का इतिहास में इस प्रकार किया है- ''..... सन् 1857 की गदर में गढ़वाल में बागी एक ऊँची टिबरी में, जो गंगा नदी के किनारे थी, खड़े करके चानमारी द्वारा मारे जाते थे। केवल एक आदमी घायल होकर नदी में गिरा और नदी पार करके भाग गया[14]।''

गदर काल में पर्वतीय क्षेत्रों में कुलियों का अभाव हो गया था। रियासत टिहरी द्वारा गदर काल में 'कुमाऊँ' कमिश्नर को खाद्य पदार्थ, कुली एवं घाटियों की रक्षा के लिए आदमी दिये गये। इनकी वफादारी और ईमानदारी का सबसे प्रत्यक्ष उदाहरण यह है कि थोड़े से चपरासियों की देख-रेख में 10/ रूपये प्रति से लेकर 50 हजार रुपये तक की राशि मसूरी से अल्मोड़ा आसानी से बेखौफ पहुँचाई गयी[15]।

टिहरी नरेश सुदर्शनशाह ने लगभग 45 वर्ष तक शासन किया। 70 वर्ष की अवस्था में उनका स्वर्गवास हुआ। उनका अपनी रानियों से कोई पुत्र नही था। इसलिए ब्रिटिश सरकार ने उनकी प्रार्थना पर एवं क्रान्तिकाल में उनके द्वारा की गयी सेवाओं को ध्यान में रखकर उन्हें अपनी उप-पत्नी से उत्पन्न पुत्र भवानी शाह (भवानी सिंह) को अपना उत्तराधिकारी घोषित करने की अनुमति प्रदान कर दी थी। सुदर्शनशाह की मृत्यु के पश्चात् ब्रिटिश सरकार ने भवानी सिंह को टिहरी का राजा घोषित किया, जो भवानी शाह के नाम से सिंहासन पर बैठा[16]।

इस प्रकार हम देखते हैं कि सन् 1857 की गदर में रियासत टिहरी में कोई विशेष हलचल नहीं हुयी। गदरकाल में टिहरी नरेश सुदर्शनशाह द्वारा अंग्रेजों की अभूतपूर्व सेवा करने के कारण कोई उनकी ब्रिटिश राजभक्ति पर उंगली नहीं उठा सकता। न केवल टिहरी नरेश वरन् उनके अधीनस्थ थोकदारों, जमीदारों, एवं समस्त रियासत की जनता ने भी गदरकाल में अपनी ब्रिटिश राजभक्ति के अनुपात उहाहरण प्रस्तुत किये थे।

सन्दर्भ :-

1,2- चन्दोला, सुरेश-स्वतंत्रता संग्राम और गढ़वाल, पृष्ठ 22-24
3,4- रतूड़ी, पं0 हरिकृष्ण-गढ़वाल का इतिहास, पृष्ठ - 228-29
5- पाण्डे, बदरीदत्त-कुमाऊँ का इतिहास, पृष्ठ 456-57
6- मियाँ, प्रेम सिंह-गुलदस्त तवारीख कोह-ए-टिहरी, पृष्ठ-352

7- पाठक, डॉ0 शेखर- उत्तराखण्ड में कुली बेगार प्रथा, पृष्ट- 107
8- स्वाधीनता संग्राम में गढ़वाल (स्वर्ण जयन्ती स्मारिका), पृष्ठ -31
9- सप्ताहिक मसूरी टाइम्स, 15 अगस्त, 1997
10- साप्ताहिक देवभूमि-26 जनवरी, 1999
11- मियां, प्रेम सिंह-पूर्वोक्त,- पृष्ठ 353
12- पाण्डे, पं0 बदरीदत्त - पूर्वोक्त, - पृष्ठ 454
13- डांडी - कांठी (प्रवासी उत्तराखण्डियों की मासिक पत्रिका) अप्रैल, 2005, पृ. 7
14- पाण्डे,- पं0 बदरीदत्त पूर्वोक्त, पृष्ठ - 457
15- पाठक, डॉ0 शेखर-पूर्वोक्त, - पृष्ठ 106
16- रतूड़ी, पं0 हरिकृष्ण - पूर्वोक्त,-पृष्ठ-229